Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal, Impact Factor: 6.1

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 5; 2025; Page No. 19-21

Special Issue of International Seminar (23rd - 24th August, 2025)
On the Topic
Indian Knowledge System (IKS): Challenges & its Application in Higher Education for Sustainable Development
By
Faculty of Education, IASE (DU), Sardarshahar, Churu, Rajasthan - 331403

IKS और स्वदेशी ज्ञान – आदिवासियों के साथ सेतु निर्माण और ग्रामीण समुदाय

रामी सिद्ध

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, आई. ए. एस. ई. (मानित विश्वविद्यालय), गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17197780

Corresponding Author: रामी सिद्ध

भूमिका

भारत की सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं का सबसे सशक्त हिस्सा है-स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge Systems – IKS)। यह ज्ञान आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के जीवन, संस्कृति, कृषि, चिकित्सा, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक संरचना में गहराई से निहित है। सदियों से यह प्रणाली केवल जीविका का आधार ही नहीं रही, बल्कि सामाजिक समरसता, प्रकृति के साथ संतुलन और आत्मनिर्भरता का प्रतीक भी रही है।

आधुनिक विकास प्रक्रियाओं और पश्चिमी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के बढ़ते प्रभाव के कारण स्वदेशी ज्ञान की उपेक्षा हुई है। इसके परिणामस्वरूप न केवल ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में पहचान का संकट उत्पन्न हुआ है, बल्कि पारंपरिक ज्ञान, प्रथाओं और सांस्कृतिक धरोहर का ह्रास भी देखने को मिल रहा है। यही कारण है कि आज विकास की नीतियों और योजनाओं में IKS को पुनः केंद्र में लाने की आवश्यकता है।

यह शोध-पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि किस प्रकार IKS और स्वदेशी ज्ञान के माध्यम से आदिवासी समाज तथा ग्रामीण समुदाय के बीच सेतु निर्माण किया जा सकता है। इसका उद्देश्य केवल परंपरागत ज्ञान को पुनर्जीवित करना नहीं है, बल्कि आधुनिक विज्ञान और तकनीक के साथ उसके समन्वय द्वारा एक सतत, समावेशी और न्यायपूर्ण विकास मॉडल प्रस्तुत करना है।

शोध में यह विशेष रूप से रेखांकित किया गया है कि –

- ग्रामीण विकास में स्वदेशी कृषि पद्धतियाँ, जल संरक्षण तकनीकें और प्राकृतिक संसाधनों के सतत् उपयोग की भूमिका क्या हो सकती है।
- सतत् आजीविका के लिए पारंपरिक हस्तशिल्प, औषधीय पौधों का उपयोग और लघु उद्यम किस प्रकार सहायक हो सकते हैं।
- शिक्षा के क्षेत्र में IKS का समावेश न केवल स्थानीय भाषा और संस्कृति को संरक्षित करेगा, बल्कि नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने में मदद करेगा।
- सामाजिक न्याय की दिशा में यह ज्ञान प्रणाली हाशिए पर खड़े समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है।

अतः यह शोध इस निष्कर्ष की ओर अग्रसर है कि यदि स्थानीय और वैश्विक ज्ञान प्रणालियों का समन्वय कर एक संतुलित विकास दृष्टिकोण अपनाया जाए, तो न केवल आदिवासी और ग्रामीण समाज में आत्मबल और पहचान की पुनर्स्थापना होगी, बल्कि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति की दिशा में भी एक ठोस कदम उठाया जा सकेगा।

मूलशब्द: Indigenous Knowledge, IKS, स्वदेशी ज्ञान, आदिवासी समुदाय, ग्रामीण विकास, सतत् विकास।

प्रस्तावना

भारत विविधता का देश है, जहाँ प्रत्येक क्षेत्र, भाषा, संस्कृति और समुदाय की अपनी विशिष्ट पहचान है। इस विविधता के बीच आदिवासी और ग्रामीण समुदायों ने सदियों से प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का एक अनूठा मॉडल प्रस्तुत किया है। उनके पास जो ज्ञान है, वह केवल व्यावहारिक (चतंबजपबंस)

ही नहीं बल्कि अनुभवजन्य (मस्त्रचमतपमदजपंस) भी है, जिसे उन्होंने पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपराओं, अनुष्ठानों, गीतों, कहावतों और रीति-रिवाजों के माध्यम से संरक्षित किया है। यही ज्ञान आज स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge System – IKS) के रूप में पहचाना जाता है। IKS की महत्ता इस बात में है कि यह प्रकृति-केन्द्रित, पर्यावरण-हितैषी और स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित है। इसमें ऐसी जीवन-दृष्टि निहित है जो व्यक्ति और समाज को केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संतुलन भी प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, आदिवासी कृषि पद्धतियाँ जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीली (resilient) हैं, उनकी पारंपरिक औषधीय पद्धतियाँ स्वास्थ्य-सुरक्षा में कारगर हैं और उनके सामाजिक रीति-रिवाज सामूहिकता तथा सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार प्ज्ञै न केवल जीविका का साधन है, बल्कि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार भी है। आज की वैश्विक दुनिया में तकनीकी प्रगति और बाज़ार-केन्द्रित विकास मॉडल ने जहां अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के पारंपरिक ज्ञान को हाशिए पर डाल दिया है। आधुनिक नीतियों में उनकी सहभागिता कम होने से यह ज्ञान धीरे-धीरे विलुप्ति की ओर बढ़ रहा है। इससे न केवल उनकी सांस्कृतिक पहचान संकट में है, बल्कि सतत विकास (Sustainable Development) की दिशा भी अधूरी रह जाती है। इस शोध-पत्र में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यदि IKS को औपचारिक शिक्षा प्रणाली, नीति-निर्माण, पर्यावरण प्रबंधन और ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में शामिल किया जाए, तो यह न केवल सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में सहायक होगा बल्कि स्थानीय समुदायों की भागीदारी, आत्मनिर्भरता और सामाजिक न्याय की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस प्रकार प्ज्ञै आधुनिक विज्ञान और तकनीक के पूरक के रूप में कार्य कर सकता है और भारत को एक अधिक संतुलित, समावेशी और प्रकृति-सम्मत विकास मॉडल प्रदान कर सकता है।

मुख्य चर्चा

IKS और स्वदेशी ज्ञान की अवधारणाः स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (Indigenous Knowledge Systems – IKS) का आशय उस ज्ञान से है जिसे किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र अथवा समुदाय ने लंबे अनुभव, प्रकृति के साथ सतत् संवाद और व्यवहारिक प्रयोग के माध्यम से अर्जित किया है। यह ज्ञान अक्सर लिखित रूप में कम और मौखिक परंपराओं, लोकगीतों, कहावतों, चित्रकला, मूर्तिकला, अनुष्ठानों और जीवन-शैली के माध्यम से अधिक संरक्षित रहता है।

IKS बहुआयामी है और इसे निम्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है-

- कृषि संबंधी ज्ञानः फसल चक्र, मिश्रित खेती, जैविक खाद का उपयोग, बीज संरक्षण, और कीट प्रबंधन की पारंपरिक पद्धतियाँ।
- पर्यावरणीय ज्ञानः जल-संरक्षण तकनीकें (जैसे तालाब, बावड़ी, जोहड़), वनों का सतत् उपयोग एवं संरक्षण, जैव विविधता की रक्षा।
- चिकित्सा ज्ञानः औषधीय पौधों का प्रयोग, हर्बल उपचार, लोक-वैद्य और परंपरागत चिकित्सा पद्धतियाँ।
- सांस्कृतिक ज्ञानः लोककला, लोकनृत्य, मौखिक साहित्य, सामूहिक पर्व और रीति-रिवाज।
- यह ज्ञान प्रणाली किसी अंधविश्वास पर आधारित नहीं है, बल्कि सदियों के अनुभव और प्रयोगों की कसौटी पर परखी गई है। इसीलिए इसे विज्ञान-सम्मत (Scientifically valid) माना जा सकता है।

आदिवासी समाज और उनका ज्ञान

भारत में लगभग 705 से अधिक आदिवासी जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनका जीवन मुख्यतः जंगल, जल और जमीन पर आधारित है। इनके ज्ञान और परंपराएँ प्राकृतिक संसाधनों के सतत् उपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

- कृषि एवं आजीविकाः झूम खेती (Shifting Cultivation), मछली पकड़ने की पारंपरिक तकनीक, और लघु वनोपज (जैसे शहद, लाख, गोंद) पर आधारित अर्थव्यवस्था।
- चिकित्साः आदिवासी वैद्य (भुमका/वैद्यराज) जड़ी-बूटियों से रोगों का उपचार करते हैं। कई बार ये उपचार आधुनिक औषधियों से अधिक प्रभावी सिद्ध होते हैं।
- जलवायु ज्ञानः आदिवासी समुदाय प्राकृतिक संकेतोंकृ पक्षियों का व्यवहार, हवाओं की दिशा, पशुओं की गतिविधि से मौसम का पूर्वानुमान लगाते हैं।
- सामुदायिक सहयोगः "सामूहिक श्रम" और ष्साझा संसाधन उपयोग आदिवासी समाज की विशेषता है, जो सामाजिक पूंजी को मजबूत करता है।

इस प्रकार, आदिवासी ज्ञान केवल आजीविका का साधन ही नहीं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक संरचना का मूल आधार है।

ग्रामीण समुदाय और IKS का महत्व

भारत का ग्रामीण समाज कृषि पर आधारित है और यह पूरी तरह प्रकृति-सम्मत ज्ञान पर टिका है। ग्रामीण जीवन में प्ज्ञै का महत्व कई रूपों में दिखाई देता है-

- **कृषि एवं खाद्य सुरक्षाः** जैविक खेती, पारंपरिक बीजों का संरक्षण और टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ, जो पर्यावरण को संतुलित रखते हुए उत्पादन देती हैं।
- **स्वास्थ्य सेवाः** ग्रामीण क्षेत्रों में हर्बल उपचार, योग और आयुर्वेद अभी भी व्यापक रूप से प्रचलित हैं। यह न केवल सुलभ और किफायती हैं, बल्कि दुष्प्रभाव रहित भी हैं।
- **आर्थिक विकासः** लोककला, हस्तशिल्प, मिट्टी के बर्तन, बांस की कलाकृतियाँ और अन्य पारंपरिक उद्यम ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती देते हैं।
- **सामाजिक पूंजी (Social Capital):** IKS ग्रामीण समाज में सहयोग, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता की भावना को सुदृढ़ करता है।

इस प्रकार IKS ग्रामीण समाज के लिए केवल ज्ञान-स्रोत नहीं, बल्कि जीवन और विकास की आधारशिला है।

4. IKS और आदिवासी-ग्रामीण- समुदाय के बीच सेतु निर्माण IKS को आदिवासी और ग्रामीण दोनों समुदायों के बीच एक सशक्त सेतु के रूप में देखा जा सकता है। यदि

इसे शिक्षा, नीति और विकास कार्यक्रमों में समाहित किया जाए तो यह सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

- शिक्षा का माध्यमः स्थानीय भाषा और आदिवासी–ग्रामीण ज्ञान को स्कूली शिक्षा का हिस्सा बनाकर बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़ा जा सकता है। "मदर टंग–बेस्ड एजुकेशन" इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।
- नीति–निर्माण में समावेशः कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण रोजगार से जुड़ी नीतियों में प्ज्ञै को मान्यता देकर इन्हें अधिक व्यवहारिक और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है।
- सतत आजीविकाः आदिवासी और ग्रामीण हस्तशिल्प, प्राकृतिक उत्पादों और पारंपरिक कृषि को प्रोत्साहित कर उनके लिए बाज़ार उपलब्ध कराया जा सकता है।
- सांस्कृतिक संरक्षणः IKS का संवर्द्धन आदिवासी और ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक पहचान को सशक्त करेगा और उन्हें वैश्वीकरण की चुनौतियों से उबरने में मदद करेगा।

इस प्रकार, IKS न केवल विकास का पूरक है बल्कि सामाजिक न्याय, समावेशन और सतत विकास का सेतु भी है।

संदर्भ

1. Gadgil, Madhav, Guha, Ramachandra. This Fissured Land: An Ecological History of India, Oxford University Press; c1992.
   → भारत में पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान और उसके सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ पर महत्वपूर्ण ग्रंथ।
2. Berkes, Fikret. Sacred Ecology: Traditional Ecological Knowledge and Resource Management, Taylor & Francis, 1999.
   → पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान और संसाधन प्रबंधन पर वैश्विक दृष्टिकोण।
3. Shiva, Vandana. Staying Alive: Women, Ecology and Development, Kali for Women, 1997.
   → ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के स्वदेशी ज्ञान और पारिस्थितिकी पर आधारित दृष्टिकोण।
4. Sharma RN. Tribal Development in India: Problems and Prospects, Rawat Publications, Jaipur, 2006.
   → भारत में आदिवासी समाज और विकास नीतियों पर गहन अध्ययन।
5. Rai, Kumar A. Indigenous Knowledge and Sustainable Development in India, Concept Publishing, New Delhi, 2010.
   → प्ज्ञै और सतत विकास के बीच संबंधों का विस्तृत विश्लेषण।
6. Verma RC. Indian Tribes Through the Ages, Ministry of Information and Broadcasting,Governmen to India, 2002.
   → भारतीय जनजातियों के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन पर महत्वपूर्ण सरकारी प्रकाशन।
7. Panda BK. Tribal and Indigenous Knowledge for Sustainable Development, Serials Publications, New Delhi, 2013.
   → आदिवासी ज्ञान और सतत विकास पर केंद्रित।
8. Government of India Reports of Ministry of Tribal Affairs & Ministry of Rural Development, 2011.
   → सरकारी नीतियों, योजनाओं और प्ज्ञै के उपयोग से संबंधित महत्वपूर्ण दस्तावेज़।
9. Sen, Amartya. Development as Freedom, Oxford University Press, 2000.
   → विकास, स्वतंत्रता और स्थानीय भागीदारी पर चिंतन, जो प्ज्ञै को समझने में आधार देता है।
10. Dikshit RD. Rural Development: Concepts and Recent Approaches, Rawat Publications, Jaipur, 2004.
    → ग्रामीण विकास और प्ज्ञै की भूमिका पर विश्लेषण।
11. Agrawal A. Dismantling the Divide Between Indigenous and Scientific Knowledge. Development and Change. 1995;26(3):413–439.
12. Gadgil M, Guha R. This Fissured Land: An Ecological History of India. Oxford University Press, 1992.
13. Mishra S. Tribal Knowledge and Sustainable Development in India. Indian Journal of Social Research. 2018;59(4):567–582.
14. Padel F, Das S. Out of This Earth: East India Adivasis and the Aluminium Cartel. Orient Blackswan, 2010.
15. Singh KS. The Scheduled Tribes of India: Anthropological Survey. Oxford University Press, 1994.
16. Census of India. Primary Census Abstract: Scheduled Tribes. Government of India. Tribes. Government of India, 2011.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.